ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 12 कुल पृष्ठ-8 21 से 27 जुलाई, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 आ. कृ.-08

ईस्ट अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज नैरोबी (केनिया) के निमंत्रण पर

त्यागी, तपस्वी आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी एवं युवा संन्यासी स्वामी वेदानन्द जी ने केनिया तथा युगांडा की आर्य समाजों में आयोजित कार्यक्रमों को सम्बोधित कर वेद प्रचार की धूम मचाई

आर्य समाज नैरोबी (केनिया) में संन्यासीवृन्द का किया गया भव्य स्वागत

स्वामी श्रद्धानन्द विद्यालय के नये भवन का स्वामी आर्यवेश जी ने किया लोकार्पण

ईस्ट अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में केनिया तथा युगांडा की विभिन्न आर्य समाजों में आयोजित वेद प्रचार के कार्यक्रमों में आर्य समाज के प्रतिष्ठित संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी तथा डॉ. नवीन आर्य (अमृतसर) भारत से तथा युवा संन्यासी स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती व श्री दिवेश काशीराम एवं श्री कमल काशीराम डरबन दक्षिण अफ्रीका से पधारे और निरन्तर 15 दिन तक विभिन्न आर्य समाजों में वेद प्रचार की धूम मचाई। सर्वप्रथम ईस्ट अफ्रीका की प्रसिद्ध आर्य समाज नैरोबी का वार्षिक समारोह 30 जून, 2022 से 3 जुलाई, 2022 तक भव्यता के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ का विशेष आयोजन किया गया जिसके ब्रह्मा पद को स्वामी आर्यवेश जी ने सुशोभित किया। वेद पाठ का दायित्व आर्य समाज नैरोबी के धर्माचार्य आचार्य वरुणदेव शास्त्री एवं श्री मवांगी शास्त्री ने निभाया और स्वामी आदित्यवेश जी तथा स्वामी वेदानन्द जी ने मंच की शोभा बढ़ाई। इस चार दिवसीय यज्ञ में ईस्ट अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वर्ण वर्मा, सभा के महामंत्री एवं आर्य समाज नैरोबी के प्रधान डॉ. यशपाल बंसल, सभा के मंत्री एवं आर्य समाज के उपप्रधान श्री यशपाल मोंगा, सभा के कोषाध्यक्ष श्री अनिल कपिला, सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री सुरेश सोफट, डॉ. मोहन लुम्बा, डॉ. राजेन्द्र सैनी, स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती वृन्दा शर्मा एवं विशिष्ट सहयोगी श्रीमती रीना वर्मा आदि के अतिरिक्त अन्य गणमान्य महानुभावों ने यजमान बनकर यज्ञ को सफल बनाया।

30 जून, 2022 को यज्ञ के उपरान्त ध्वजारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ओ३म् ध्वज के अतिरिक्त केनिया राष्ट्र का राष्ट्रीय ध्वज समूचे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्वामी आर्यवेश जी के कर-कमलों द्वारा फहराया गया। उनके साथ स्वामी वेदानन्द जी, स्वामी आदित्यवेश जी एवं प्रतिनिधि सभा तथा आर्य समाज के प्रमुख पदाधिकारियों ने भी सहयोग किया। स्त्री आर्य समाज की बहनों ने ध्वजगान प्रस्तुत कर ओ३म् ध्वज की महिमा गाई तथा केनिया का राष्ट्रगान स्कूल के विद्यार्थियों ने गाकर औपचारिकता पूरी की। इस प्रकार 30 जून को कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन होने के बाद 30 जून सायंकाल से निरन्तर 3 जुलाई, 2022 तक कार्यक्रम चलते रहे। स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी वेदानन्द जी व स्वामी आदित्यवेश जी के ओजस्वी व्याख्यानों के अतिरिक्त डॉ. नवीन आर्य, श्री दिवेश काशीराम व श्री कमल काशीराम के संयोजन में विशेष कार्यशाला भी आयोजित की गई जिसमें सेवा के कार्य करने के तरीके एवं कार्यशैली पर विस्तार से विचार प्रस्तुत किये गये। 1 जुलाई, 2022 को

शेष पृष्ठ 2 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज कम्पाला (युगांडा) में भव्य यज्ञशाला के निर्माण के लिए स्वामी आर्यवेश जी ने की दान की अपील

आर्य समाज मोम्बासा में स्वामी आर्यवेश जी का हुआ ओजस्वी उद्‌बोधन

ईस्ट अफ्रीका के आर्यजनों में हुआ नये उत्साह का संचार

सायंकाल संगीत संध्या का आयोजन किया गया जिसमें केनिया के प्रसिद्ध गायक ने देशभक्ति गीत सुनाकर लोगों का खूब मनोरंजन किया। 2 जुलाई को सायं 4 बजे पार्कलेन आर्य समाज के विशाल प्रांगण में नव–निर्मित स्वामी श्रद्धानन्द विद्यालय के भवन का लोकार्पण स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. मोहन लुम्बा, श्री सुरेश सोफट व आर्चीटेक्ट सरदार जी का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया। लोकार्पण से पूर्व यज्ञ भी नये भवन में आयोजित किया गया और पूर्ण वैदिक रीति से नये भवन के प्रवेश की प्रक्रिया पूरी की गई।

3 जुलाई, 2022 को महर्षि दयानन्द भवन में सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न मतों के प्रतिनिधियों ने सम्मिलित होकर समाज में सौहार्द, समरसता एवं समन्वय स्थापित करने पर बल दिया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने सभी मत–सम्प्रदायों के प्रतिनिधियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

आर्य समाज नैरोबी, ईस्ट अफ्रीका एवं केनिया की प्रसिद्ध एवं सम्पन्न आर्य समाज है। यहीं पर ईस्ट अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य कार्यालय है और इसी आर्य समाज से अन्य सभी आर्य समाजों को विशेष सहयोग भी समय–समय पर प्रदान किया जाता है। गत् दो–तीन वर्ष से आर्य समाज नैरोबी के पूर्व प्रधान एवं ईस्ट अफ्रीका के वर्तमान कोषाध्यक्ष श्री अनिल कपिला जी स्वामी आर्यवेश जी से निरन्तर सम्पर्क करते रहे कि वे नैरोबी में बहुत शीघ्र एक कार्यक्रम आयोजित करने जा रहे हैं जिसमें आपको अवश्य आना होगा। कोरोना के कारण यह कार्यक्रम सम्भव नहीं हो सका किन्तु अब स्थिति सामान्य होने पर बड़े उत्साह के साथ आर्य समाज के प्रांगण में चार दिवसीय 119वाँ स्थापना समारोह बड़े उत्साह एवं उमंग के साथ मनाया गया और इसमें केवल स्वामी आर्यवेश जी नहीं बल्कि दो तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी एवं स्वामी वेदानन्द जी

कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। ऐसे युवा संन्यासियों के ओजस्वी व्याख्यानों से आर्य समाज के कार्यकर्ताओं में नये उत्साह का संचार हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज के प्रमुख अधिकारियों के साथ स्वामी आर्यवेश जी तथा अन्य सभी संन्यासियों की प्रतिदिन महत्त्वपूर्ण बैठक होती रही जिसमें ईस्ट अफ्रीका में आर्य समाज की गतिविधियों को तीव्र करने पर विचार–विमर्श होता रहा। इस चार दिवसीय समारोह में स्वामी आर्यवेश जी ने विविध विषयों पर अपने व्याख्यान दिये और ईस्ट अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य समाज नैरोबी द्वारा कोरोना के दौरान आक्सीजन कंस्ट्रेटर व ऑक्सीमीटर भारत भेजने पर हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया और भारत में उनके सहयोग से जिन गरीब ग्रामीण लोगों को लाभ पहुंचा उनका विवरण स्वामी आदित्यवेश जी ने विस्तार से आर्यजनों के समक्ष प्रस्तुत किया।

विदित हो कि कोरोना के दौरान ईष्ट अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज नैरोबी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका की ओर से स्वामी आर्यवेश जी की अपील पर ऑक्सीजन कंस्ट्रेटर व ऑक्सीमीटर भारत भेजे गये थे जिनका लाभ ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को प्राप्त हुआ था।

स्वामी आदित्यवेश जी ने आर्य समाज नैरोबी, आर्य समाज मोम्बासा व ईस्ट अफ्रीका के अन्य देशों में स्थित आर्य समाजों के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए अनेक सनसनीखेज घटनाएँ व उदाहरण प्रस्तुत कर लोगों को आश्चर्यचकित कर डाला। उन्होंने आर्यजनों को प्रेरणा दी कि अपने पूर्वजों से हम सभी को यह सीखना चाहिए कि आर्य समाज का कार्य कैसे किया जाता है। उन्होंने ईस्ट अफ्रीका में आर्य समाज की 100 शाल की उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उनके व्याख्यान से आर्यजनों में एक नई ऊर्जा उत्पन्न हुई।

स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में नैरोबी स्थित सभी आर्य विद्यालयों का निरीक्षण भी कराया गया। स्त्री आर्य समाज के विद्यालय में बच्चों के अनुशासन व उनको दिये जा रहे संस्कारों से प्रतिनिधि मण्डल विशेष प्रभावित हुआ। आर्य समाज युगाण्डा व आर्य समाज मोम्बासा के कार्यक्रमों से लौटने के बाद 10 जुलाई, 2022 को सायं स्वामी आर्यवेश जी व उनके समस्त सहयोगियों के सम्मान में विदाई समारोह आयोजित किया गया जिसमें उन्हें स्मृति चिन्ह, शॉल व दक्षिणा आदि से सम्मानित किया गया। सभा के प्रधान श्री स्वर्ण वर्मा जी, महामंत्री डॉ. यशपाल बंसल जी, मंत्री श्री यशपाल मोंगा जी, कोषाध्यक्ष श्री अनिल कपिला जी व स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती वृन्दा शर्मा आदि ने सभी का मुक्त कंठ से धन्यवाद ज्ञापित किया।

आर्य समाज कंपाला (युगांडा) में ईस्ट अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में हुआ वेद प्रचार का भव्य आयोजन

आर्य समाज के यशस्वी आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी तथा स्वामी वेदानन्द जी ने किया सम्बोधित

सभा के कोषाध्यक्ष श्री अनिल कपिला जी की रही गरिमामयी उपस्थिति

गत् पिछले कई दिनों से नैरोबी में लगातार वेद प्रचार कार्यक्रम के सफल आयोजन के पश्चात दिनांक 5 जुलाई, 2022 को प्रातः स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी वेदानन्द जी, स्वामी आदित्यवेश जी, श्री अनिल कपिला जी, श्री कमल काशीराम एवं श्री दिवेश काशीराम की टीम नैरोबी से कंपाला के लिए रवाना हुई। लगभग एक घंटे का हवाई जहाज का सफर तय करने के बाद एंटीगे एयरपोर्ट पर पहुंचे। वहां पर आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी श्री रजनी टेलर तथा आर्य समाज कंपाला के अधिकारियों में श्री अमित आर्य तथा धर्माचार्य श्री धर्मदेव जी एयरपोर्ट पर हम सबको लेने के लिए पहले से ही पहुंचे हुए थे।

कंपाला (युगांडा) पहुंचने के बाद सबसे बड़े नेशनल पार्कों में से एक युगांडा के पारा नेशनल पार्क जो लगभग 3800 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है, इस पार्क को देखने का अवसर हम सभी को प्राप्त हुआ। इस पार्क में जहाँ सबसे पावरफुल वाटर फॉल देखने का मौका मिला वहीं चीते, शेर, जिराफ, हाथी, हिरण, जेब्रा के अतिरिक्त विभिन्न वन्यजीवों को पहली बार बहुत निकट से देखने का मौका मिला। इस दौरान लगभग 5000 किलोमीटर लंबी नील नदी में 35 किलोमीटर का सफर वोट से तय करने का रोमांचकारी दृश्य यादगार के रूप में हमेशा बना रहेगा। नेशनल पार्क भ्रमण के पश्चात हम आर्य समाज कंपाला में पहुंचे।

आर्य समाज कंपाला पहुँचने पर श्री रजनी टेलर, आर्य समाज कंपाला के प्रधान कुलदीप ओबराय, श्री अमित आर्य सहित कई गणमान्य महानुभावों ने हम सबको भेंटस्वरूप पुस्तकें तथा ओम पट्ट पहनाकर सभी अतिथियों का स्वागत किया। आर्य समाज द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं का अवलोकन करने के पश्चात सायंकालीन यज्ञ से पूर्व ध्वजारोहण किया गया। आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी विश्वविख्यात आर्य संन्यासी एवं सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने ओम ध्वज फहराकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। ध्वजारोहण के पश्चात् कार्यक्रम मुख्य मंच से संचालित हुआ। आचार्य धर्मदेव जी ने यज्ञ करवाया।

इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए हिंदू काउंसिल ऑफ अफ्रीका के प्रधान श्री रजनी टेलर ने कहा कि हम यहां लगभग 49 संस्थाओं के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि युगांडा में आर्य समाज के विस्तार के लिए हम सब कटिबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के प्रचार–प्रसार को और अधिक गति देने के लिए स्वामी आर्यवेश जी जैसे संन्यासियों का मार्गदर्शन हम सबके लिए विशेष प्रेरणा देने वाला रहेगा।

युवा हृदय सम्राट आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आर्य समाज तथा ऋषि दयानन्द सरस्वती जी का मानवतावादी दृष्टिकोण वेदों के आधार पर टिका हुआ है। स्वामी जी ने कहा कि दैनिक जीवन को चलाने के लिए हम सबको वेद पर आधारित मान्यताओं को जन–जन तक पहुँचाने की आवश्यकता है। स्वामी जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने हम सबको जो मार्ग दिखाया है उस पर हम सबको चलना है तथा पूरी मानवता के लिए कार्य करते रहना है। उन्होंने कहा कि यदि समूची मानवता का भला करना है तो हम सबको वैदिक मान्यताओं को अपनाना ही होगा। मानव, मानव में किसी प्रकार भेदभाव नहीं करना चाहिए। सबके कल्याण की भावना से ही संसार का उपकार हो सकता है। इस संसार में जितने भी प्राणी हैं वह सब ईश्वर द्वारा बनाये हुए हैं, इसलिए हम सबको प्रत्येक जीव का विशेष ख्याल रखना चाहिए। यदि हम सब ऐसा करने में सफल हो पाते हैं तभी मनुष्य जीवन का लाभ है। स्वामी जी ने कहा कि हमने सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में महत्त्वाकांक्षी योजना बनाकर घर–घर वेद पहुँचाने का लक्ष्य बनाकर कार्य प्रारम्भ किया तथा वेद का पुनः प्रकाशन कराकर तेजी से वेद प्रचार का कार्य प्रारम्भ किया हुआ है। आज यहाँ आकर मुझे प्रसन्नता हो रही है कि हमारे आर्य भाई–बहन दूर देश में भी आकर वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में लगे हुए हैं यह अपने आप में प्रशंसनीय कार्य है। आप सभी लोगों से मैं अपील करता हूँ कि आप लोग वेद प्रचार को और अधिक तीव्र गति प्रदान करें जिससे पूरे संसार में वेद प्रचार को और तेजी से विस्तार प्रदान किया जा सके। स्वामी जी के प्रभावशाली प्रवचन के उपरांत दर्जनों व्यक्तियों ने स्वामी जी से मिलकर कहा कि हम आपसे बहुत प्रभावित हुए हैं, आपके मार्गदर्शन हम सबको विशेष प्रेरणा देंगे। हम सब आपको आश्वासन देते हैं कि आप द्वारा सुझाये गये निर्देशों पर कार्य करते हुए आगे बढ़ने का कार्य करेंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा ईस्ट अफ्रीका के कोषाध्यक्ष श्री अनिल कपिला जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमें यहां पर आर्य समाज के कार्यों को और तेजी के साथ आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। उन्होंने संगठन को मजबूत करने के लिए कुछ सुझाव भी दिए। आर्य समाज कंपाला की ओर से सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

ईस्ट अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में केनिया तथा युगांडा की विभिन्न आर्य समाजों में आयोजित कार्यक्रमों को सम्बोधित करने के लिए भारत से यशस्वी आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, डॉ. नवीन आर्य जी एवं दक्षिण अफ्रीका से युवा संन्यासी स्वामी वेदानन्द जी, श्री दीवेश काशीराम व श्री कमल काशीराम आदि संन्यासी एवं विद्वानों ने अपने ओजस्वी विचारों से कार्यक्रमों में वैदिक सिद्धान्तों का जहाँ प्रचार किया वहीं इन सभी कार्यक्रमों को सफल बनाने में जिन विशिष्ट महानुभावों का विशेष सहयोग रहा उनके नाम इस प्रकार हैं – सर्वश्री स्वर्ण वर्मा–सभा प्रधान, डॉ. मोहन लुम्बा–सभा उपप्रधान, श्री अरुण तनेजा–सभा उपप्रधान, श्री रजनी टेलर–सभा उपप्रधान, श्री अमित अग्रवाल–सभा उपप्रधान, डॉ. यशपाल बंसल–सभा महामंत्री, श्री यशपाल मोंगा–सभा उपमंत्री, श्री अनिल कपिला–सभा कोषाध्यक्ष, श्रीमती वृन्दा शर्मा–सभा उपकोषाध्यक्ष, डॉ. मनोहर अग्रवाल–सचिव धर्मार्य सभा, श्रीमती रीना वर्मा–सचिव विद्या आर्य सभा, श्री प्रदीप सूद, श्री कुलदीप राय ओबेराय, श्रीमती पन्ना अग्रवाल, डॉ. सुरेश नेहरा, श्री अनिल वालिया, श्री गौरव गुप्ता, श्री अमित भट्टाचार्य, डॉ. लता मेगन, डॉ. राजेन्द्र सैनी, सेवानिवृत मेजर अजय अग्रवाल आदि के अतिरिक्त सभा के पूर्व प्रधान श्री सुरेश सोफट, आर्य समाज नैरोबी के मंत्री श्री पवन कौशल, उपमंत्री श्री सुधीर पुंज, कोषाध्यक्ष श्री रमेश गोहिल, उपकोषाध्यक्ष श्री अलका साही, श्री राजेन्द्र ओबेराय, कर्नल जे.के. मेहरा, श्री शरत वर्मा, श्री कमल जोशी–पूर्व प्रधान, श्री नारंग जी, श्रीमती वृन्दा शर्मा–प्रधाना स्त्री आर्य समाज, श्री उर्मिला तलवार–उपप्रधाना, श्रीमती करुणा भारद्वाज–मंत्राणी, श्रीमती रीना वर्मा–कोषाध्यक्ष, श्रीमती ममता नायर, श्रीमती बृजदत्ता, श्रीमती नीलू पाठक, श्रीमती कमलेश मोंगा आदि।

आर्य समाज मोम्बासा में प्रधान श्री गौरव गुप्ता, मंत्री श्री प्रवीण अग्रवाल, डॉ. शील वर्मा, श्री एस.आर. कंचन–पूर्व प्रधान, श्री अनिल भल्ला व श्रीमती भल्ला, श्रीमती रुचि अग्रवाल एवं आचार्य यशपाल अंगिरा आदि।

आर्य समाज युगांडा में श्री कुलदीप ओबेराय–प्रधान, श्री अमित भट्टाचार्य, श्री प्रमोद–मंत्री, श्री प्रीतपाल तनेजा, श्री शैलेन्द्र कुन्द्रा, श्री पी. के. शर्मा, श्री एस. तनेजा व धर्माचार्य आचार्य धर्मदेव आदि।

आर्य समाज नैरोबी में आचार्य वरुणदेव शर्मा एवं श्री मवांगी शास्त्री का विशेष सहयोग रहा।

आर्य समाज केनिया व युगांडा में वेद प्रचार कार्यक्रम की चित्रमय झलकियाँ

आर्य समाज केनिया व युगांडा में वेद प्रचार कार्यक्रम की चित्रमय झलकियाँ

ईस्ट अफ्रीका आर्य समाज का संक्षिप्त इतिहास

126 वर्ष पूर्व पंजाब से केन्या पहुंचे 39 लोगों ने ईस्ट अफ्रीका में फहराई आर्य समाज की पताका

हम अक्सर एक गीत आर्य समाज के कार्यक्रमों में सुनते हैं। "वेदों का डंका आलम में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने" इन पंक्तियों को विदेशों की भूमि पर चरितार्थ करने के लिए हजारों लोगों ने तन–मन–धन की बाजी लगाकर अपने आपको सर्वात्मना समर्पित किया। अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, हॉलैंड आदि देशों में आर्य समाज आज अपने कार्य सुचारू रूप से कर रहा है। लेकिन इन देशों से वर्षों पूर्व पूर्वी अफ्रीका में आर्य समाज की स्थापना हुई। 1896 से 1901 तक जब पंजाब से लगभग बीस हजार लोग केनिया पहुंचे तथा यहां पर रेलवे लाइन बिछाने के कार्य में लगे। इन लोगों में कुछ आर्य समाज में विश्वास रखने वाले लोग भी थे। यह सर्व विदित है कि जहाँ पर आर्य समाज का एक भी कार्यकर्ता होगा वहाँ वेदों व ऋषि की मान्यताओं का प्रचार व प्रसार निश्चित होगा। इन्हीं आर्य सज्जनों ने धार्मिक सज्जनों को एकत्रित किया। कुल 45 सज्जन एकत्रित हुए। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने आर्य समाज की स्थापना करने का आग्रह किया। उस समय शर्त रखी जो सज्जन शराब व मांस का सेवन नहीं करेगा वही आर्य समाज का सदस्य बन सकेगा। उसके बाद केवल 39 व्यक्ति ही आर्य समाज के सदस्य बने। उन्होंने ही 5 जुलाई 1903 को आर्य समाज नैरोबी की स्थापना की। अपने देश से 5000 किलोमीटर दूर भी वैदिक धर्म की ध्वजा को फहराने का कार्य प्रारंभ किया। उसके बाद यहां आर्य समाजों की स्थापना का कार्य जोर पकड़ने लगा। इसी समय आर्य समाज मोम्बासा, आर्य समाज अल्डोरेट, आर्य समाज किसुमु, आर्य समाज जंजीबार, आर्य समाज एंबेल, आर्य समाज–ए–सलम आदि विश्व प्रसिद्ध आर्य समाजें अस्तित्व में आई। इन समाजों की स्थापना में श्री बदरीनाथ आर्य, लाला मथुरा दास कपिला, पंडित बैसाखी राम भारद्वाज, श्री बिहारी लाल, श्री वजीरचंद, श्री अमर नाथ, श्री जयगोपाल, श्री लक्ष्मणदास, श्री मूलचंद, श्री रामरतन आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इंद्रसिंह केंट को चेयरमैन, श्री बदरीनाथ को मंत्री तथा श्री जयपाल को कोषाध्यक्ष बनाया गया। इन सबने बहुत कर्मठता से कार्य किया और एक वर्ष में आर्य सदस्यों की संख्या 39 से बढ़कर 60 हो गई। इस समय आर्य समाज ने अपनी गतिविधियां केनिया में काफी तेजी से बढ़ा दी थी और उसका परिणाम यह हुआ कि कुछ मुस्लिम संगठन जो ईस्ट अफ्रीका के देशों में ज्यादा सक्रिय थे वह आर्य समाज का विरोध करने लगे उनमें भी अंजू में इस्लाम नामक संगठन आर्य समाज के कार्यक्रमों का खुलकर विरोध करने लगा। डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार द्वारा लिखित आर्य समाज के इतिहास के भाग 2 के पृष्ठ संख्या 695 पर लिखा कि इस समय आर्य समाज के सामने परिस्थितियां बिल्कुल विपरीत थी और केन्या में मुस्लिम संगठन आर्य समाज का हर मोर्चे पर विरोध करने लगे थे। उस समय श्री शालिग्राम शर्मा तथा श्री बिहारी लाल ने मुसलमानों की सभाओं में आर्य समाज पर लगाए जाने वाले आरोपों का तर्क सहित जवाब दिया और उसका परिणाम यह हुआ कि आर्य समाज की विजय हुई और आर्य समाज का वर्चस्व केनिया देश में खासकर भारतीय समुदाय में विशेष रूप से बढ़ गया। मुस्लिम संप्रदाय के लोगों को मुंह की खानी पड़ी और भारतीय समुदाय में मुस्लिम अब निंदा के पात्र बन चुके थे। 2 नवम्बर, 1904 को नैरोबी में कार्यकारिणी की बैठक हुई और उसमें यह निर्णय लिया गया कि अब तक आर्य समाज की गतिविधियां जो आर्य समाज के अधिकारियों के घर से संचालित होती थी वह अब आर्य समाज मंदिर के माध्यम से चलें। इसीलिए 1 एकड़ जमीन खरीदने के लिए प्रस्ताव पास किया गया और यह जमीन खरीदने के लिए सर्वप्रथम आर्य समाज के तत्कालीन प्रधान तथा तत्कालीन मंत्री ने 3 और 2 देकरके दान एकत्रित करने की शुरुआत की। आर्य समाज का पहला (वार्षिकोत्सव) जलसा 6 व 7 अगस्त, 1904 को नैरोबी में हुआ। कीनिया में वार्षिकोत्सव जलसा के नाम से प्रसिद्ध है यह कार्यक्रम बड़े व्यापक स्तर पर आयोजित होता है।

अंजूम ए इस्लाम के लोगों ने आम हिंदुओं को निशाने पर लेकर उनके खिलाफ सभाओं में बोलना प्रारंभ किया। लेकिन आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने इस जलसे का संयोजन बहुत सुंदर तरीके से किया परिणाम स्वरूप भारत से गए हुए हिंदू समाज को विश्वास हुआ कि आर्य समाज उनकी ढाल है। ज्यादातर लोग अब आर्य समाज से प्रभावित हो चुके थे। 21 अगस्त, 1904 को एक बहुत बड़ा कार्यक्रम नैरोबी के टाउन हॉल में आयोजित किया गया जिसमें हिंदू समाज एवं आर्य समाज के सैकड़ों लोग पहली बार बड़ी संख्या में उपस्थित हुए। उसके बाद आर्य समाज एक नई पहचान के साथ ईस्ट अफ्रीका के देशों में कार्य करने लगा। 11 सितंबर, 1994 को नैरोबी का दिल माना जाने वाले मामा नगीना रोड पर आर्य समाज भवन की नींव रखी गई। नींव में स्वामी दयानंद सरस्वती का चित्र कुछ पैसे कुछ हाथ से लिखी हुई सामग्री रखी गई और इस भवन के निर्माण में केवल दो महीने का समय लगा। लोहे की छत से तैयार किया गया यह भवन 6 नवंबर को बनकर तैयार हो गया। इसके बाद यहां साप्ताहिक सत्संग जिसको संडे सत्संग कहते हैं उसका सिलसिला प्रारंभ हुआ, जो कि वर्तमान समय तक निरंतर चल रहा है आर्य समाज के भवन की व्यवस्था व्यवस्थित बिल्डिंग 6 नवंबर, 1912 में बननी प्रारंभ हुई जिसके लिए किंग ऑफ बड़ौदा के भाई संपत सिंह गायकवाड ने 5000 यूरो दान दिए। इस बिल्डिंग को बनाने में लगभग 4 वर्ष का समय लगा और 1916 में यह बिल्डिंग बनकर तैयार हो गई और आगे चलकर इस भवन में 600 व्यक्तियों के एक साथ बैठकर कार्यक्रम करने के लिए हॉल, तीस कमरे, मूल जी जेठा के सहयोग से यज्ञशाला, एक पुस्तकालय तथा पढ़ने के लिए अलग से व्यवस्था की गई।

इस समय आर्य समाज में सदस्यों की संख्या निरंतर बढ़ रही थी, लेकिन उस समय के आर्य नेताओं ने यह सुनिश्चित किया कि कोई भी व्यक्ति जो सिद्धांत प्रिय नहीं है तथा शाकाहारी नहीं है उसको संगठन में कार्य करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। इसीलिए लगभग 30 व्यक्तियों को आर्य समाज की प्राथमिक सदस्यता से निष्कासित किया गया जो मांसाहार तथा मद्यपान करते थे। इस कार्य से आर्य समाज के कार्यों में और तेजस्विता आई।

क्योंकि इस समय भारत में पंजाब के स्वामी श्रद्धानंद जी आर्य समाज व आजादी के आंदोलन के अग्रणी नेता थे। उनका प्रभाव इन लोगों पर गहरा था। भारत के साथ कीनिया में भी आर्य समाजी अंग्रेज के खिलाफ गतिविधियां चलाने लगे। परिणामस्वरूप आर्य समाजों पर अंग्रेज पाबंदी लगाने लगा। जैसा कि वेलेंटाइन सिरोल में अपनी पुस्तक 'अन रेस्ट इन इंडिया' के पेज नंबर 5 पर लिखा हुआ है कि जहां–जहां पर आर्य समाज है वहां–वहां पर अंग्रेज के खिलाफ एक विद्रोह दिखाई देता है। उसी का परिणाम था की 1918 में आर्य समाज मोम्बासा पर पाबंदी लगा दी गई। उस समय के प्रधान बिशनदास लाला राम शर्मा को कैद किया गया। आर्य समाज नैरोबी का जहां सारा रिकॉर्ड जब्त किया गया वहीं उसकी पूरी प्रॉपर्टी को भी छीन लिया। नैरोबी आर्य समाज के मंत्री देवीदास पुरी व अन्य अधिकारियों को आर्य समाज छोड़ने की धमकी अंग्रेजो ने दी। इस समय आर्य प्रतिनिधि सभा अस्तित्व में नहीं आई थी। लेकिन आर्य समाज नैरोबी के सभी आर्यजन एकत्रित रहे और उस समय क्योंकि आम हिंदू समाज के ऊपर भी आर्य समाज का गहरा प्रभाव था उन्होंने भी आर्य समाज का जमकर साथ दिया और अंत में विजय आर्य समाज की हुई। अंग्रेजों ने आर्य समाज का जब्त किया हुआ रिकॉर्ड वापस दिया तथा उनकी छीनी हुई प्रॉपर्टी को भी वापस लौटाना पड़ा। आर्य समाज के साथ की गई इस घिनौनी हरकत से कीनिया की आर्य जनता में गुस्सा पैदा हुआ तथा आर्य समाजी अब और ज्यादा सक्रिय हो गए। उन्होंने इसी वर्ष 1918 में आर्य युवक सभा (आर्य समाज सुरक्षा दस्ता) का गठन किया तथा मथुरा देवी आर्या ने अपनी सहयोगी बहनों के साथ मिलकर स्त्री आर्य समाज की स्थापना भी कर दी। लंबे संघर्ष के बाद आर्य समाज मुंबासा तथा आर्य समाज नैरोबी को पुनः प्रारंभ किया गया।

1902 में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कांगड़ी गांव में गुरुकुल खोला तो आर्य समाज नैरोबी के कार्यकर्ताओ ने भी कन्या पाठशाला प्रारंभ की। पहले यह पाठशाला अधिकारियों के घर पर प्रारंभ की गई। केनिया में प्रथम आर्य कन्या विद्यालय 1910 में प्रारंभ किया गया। इसमें विशेष सहयोग गुजरात में जन्में व केनिया आदि देशों में अपने व्यापार करने वाले श्री नान जी भाई कालीदास मेहता का रहा। उसके बाद लगभग दस शिक्षण संस्थान यहां पर खोले गए। प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी नानजीभाई कालीदास मेहता ने अपनी पार्कलैंड नैरोबी की जमीन आर्य समाज को शिक्षण संस्थान खोलने के लिए दी और विदित हो कि यह पार्कलैंड वह स्थान था जहां पर केनिया देश के लोगों को 2:00 बजे के बाद और भारत के लोगों को 6:00 बजे के बाद जाने की अनुमति नहीं थी। लेकिन यह अधिकांश एरिया नानजीभाई कालीदास मेहता ने अंग्रेजों को किराए पर दे रखा था। उसके बाद उन्होंने जैसे ही यह जमीन आर्य समाज को दी वहां पर विशेष तौर पर भारतीयों का आवागमन बढ़ गया और अंग्रेज उनका मुंह ताकता ही रह गया।

आर्य समाज भारतीय समाज में शिक्षा एवं सेवा के कार्य को विशेष रूप से कर रहा था। लेकिन उस समय पर कुछ मुस्लिम संगठन जिनका जिक्र पहले हुआ है तथा कुछ ऑर्थोडॉक्स हिंदू संगठनों ने आर्य समाज का विरोध करना प्रारंभ कर दिया था। प्रथम विश्व युद्ध के बाद शांति प्रयासों के ईस्ट अफ्रीका के देशों के मुख्य सचिव आर्चबिशप को आर्य समाज के विरुद्ध एक्शन लेने की सिफारिश कुछ संगठनों ने की। उन्होंने आर्य समाज तथा सत्यार्थ प्रकाश का हवाला देकर उन पर कार्यवाही करने की मांग उठाई लेकिन आर्य समाज के उस समय के विद्वानों तथा नेताओं ने जमकर अपनी बातें रखी तथा आर्य समाज का विश्व कल्याण का भाव सबके सामने रखा और उसका परिणाम रहा कि इन संगठनों को मुंह की खानी पड़ी और आर्य समाज फिर से अग्नि परीक्षा देकर हिंदू समाज में अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने में कामयाब रहा।

पंडित माधवाचार्य जी जो पुराणों के विद्वान थे सनातन धर्म सभा के माध्यम से प्रचार व प्रसार करने के लिए 1919 व 1929 में दो बार भारत से केनिया भेजे गए उन्होंने वहां जाकर आर्य समाज पर अनाप–शनाप आरोप लगाने प्रारंभ कर दिए उनके द्वारा लगाए गए आरोपों का आर्य समाज नैरोबी के विद्वान पंडित बालकृष्ण जी तथा डी. ए. वी. के विद्वान पंडित बुद्धदेव मीरपुरी ने बहुत सुंदर तरीके से जवाब दिया और माधवाचार्य को मुंह की खानी पड़ी। आर्य समाज ने कीनिया में हिंदी के प्रचार–प्रसार, नारी सम्मान, स्वरोजगार, चिकित्सा सुविधाओं, खेल आदि के माध्यम से विशेष उपकार के कार्य किए।

जब स्वामी श्रद्धानंद जी की 1926 में हत्या कर दी गई थी उनकी याद में उसी वर्ष केनिया के नैरोबी में स्वामी श्रद्धानंद ब्रह्मचर्य आश्रम खोलने

शेष पृष्ठ 7 पर

आचार्य देवराज शास्त्री जी का आकस्मिक निधन

स्वामी ब्रह्मानंद दण्डी जी द्वारा स्थापित विश्व विख्यात आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ, एटा के मुख्य अधिष्ठाता, वैदिक विद्वान आचार्य देवराज शास्त्री जी का शुक्रवार, दिनांक 15 जुलाई 2022 को सायंकाल आकस्मिक निधन हो गया। आचार्य देवराज शास्त्री जी गुरुकुल के स्थापना काल के प्रथम विद्यार्थी थे। उन्होंने गुरुकुल में बहुत छोटी सी आयु में वेदों की शिक्षा ग्रहण करने के उद्देश्य से वर्ष 1948 में प्रवेश लिया। शिक्षा पूर्ण होने के उपरान्त पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी ने उनके पूज्य पिता जी से इस गुरुकुल को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने के लिए आचार्य देवराज जी को गुरुकुल को समर्पित करने का आग्रह किया।

स्वामी जी के इस आग्रह को स्वीकार करते हुए शास्त्री जी के पिता जी ने अपने सबसे बड़े सुपुत्र होने के बाबजूद भी उन्हें गुरुकुल को समर्पित कर दिया। उनकी कार्य कुशलता, लगन, निष्ठा और संयोजन करने की क्षमता को देखते हुए पूज्य आचार्य जी को आदरणीय स्वामी ब्रह्मानंद दण्डी जी ने उन्हें गुरुकुल के मुख्य अधिष्ठाता की जिम्मेदारी दे दी। तबसे जीवन के अंतिम सांस तक वे गुरुकुल के लिए समर्पित रहे। अपने परिवार के साथ बैठकर वार्तालाप करते हुए सभी

परिजनों के सामने उन्होंने अंतिम सांस ली। इस दुःखद समाचार को सुनते ही आर्यजनों में शोक की लहर दौड़ पड़ी। एटा क्षेत्र के साथ.साथ उनके हजारों शिष्य जो आज उच्च पदों पर कार्यरत हैं उनका गुरुकुल में पहुँचना प्रारम्भ हो गया। उनका अंतिम संस्कार (शनिवार) दिनांक 16 जुलाई, 2022 को आर्ष गुरुकुल, यज्ञतीर्थ, एटा में किया गया। अंतिम संस्कार में उनके परिवारजनों, अनेक वैदिक विद्वानों, आर्य जनों एवं एटा क्षेत्र के गणमान्य लोगों सहित हजारों नम आंखों ने उन्हें भावभीनी विदाई दी। आचार्य जी ने अपना पूरा जीवन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा दिखाये गये रास्ते पर चलकर शिक्षा के माध्यम से आर्य समाज के प्रचार–प्रसार का कार्य किया। उन्होंने अपने जीवन का अधिकतम समय आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ, एटा को दिया। ऐसे महान् तपस्वी विद्वान आचार्य देवराज शास्त्री जी को आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक सभा की ओर से हम विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। विदित हो कि आचार्य देवराज शास्त्री जी की स्मृति में सोमवार दिनांक 25 जुलाई 2022 को प्रातः :10.00 बजे से आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा (उत्तर प्रदेश) में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया है जिसमें आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी विश्वविख्यात आर्य संन्यासी एवं नेता स्वामी आर्यवेश जी स्वयं भी उपस्थित होंगे तथा उनके साथ अन्य संन्यासी, विद्वान् तथा आर्यनेता अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए पहुँचेंगे।

पूर्व विधायक श्री रामशरण आर्य जी उर्फ लहटू ताऊ का असामयिक देहावसान

आर्य समाज संगठन से जुड़े समाजसेवी एवं पूर्व विधायक श्री रामशरण आर्य जी उर्फ लहटू ताऊ का विगत दिनों असमय निधन हो गया है। श्री रामशरण आर्य जी अपने प्रारम्भिक जीवन से ही अविवाहित रहकर आर्य समाज संगठन से जुड़कर समाजसेवा के कार्यों में जुटे रहे और अपने क्षेत्र में लहटू ताऊ के नाम से प्रसिद्ध हुए। अपने क्षेत्र में किये गये जनोपयोगी कार्यों के आधार पर ही उन्होंने जिला-हाथरस (उत्तर प्रदेश) के सादाबाद विधानसभा क्षेत्र का चुनाव जीता और विधायक के रूप में भी अनेक सामाजिक कार्य किये। वह सदैव किसानों की समस्याओं के लिए सरकार से संघर्ष करते रहे। उन्होंने अपना जीवन बड़ी ही सादगी के साथ बिताया और विधायक बनने के बाद भी कभी दो पहिया एवं चार पहिया वाहन तक अपने प्रयोग के लिए नहीं खरीदा। वर्तमान में वह हाथरस क्षेत्र में अवैध रूप से संचालित होने वाले पशुओं के बूचड़खानों को बन्द कराने के लिए अपने साथियों के साथ प्रयास कर रहे थे। ऐसे आर्य विचारों से ओत-प्रोत कर्मठ समाजसेवी एवं पूर्व विधायक का निधन आर्य समाज संगठन एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। परन्तु परमात्मा के नियम के सामने हम सब लोगों के समक्ष नतमस्तक होने के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं होता। उनका सादगी पूर्ण जीवन आज की युवा पीढ़ी एवं राजनेताओं के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा। स्वामी आर्यवेश जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री रामशरण आर्य उर्फ लहटू ताऊ जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

श्रीमती उर्मिला कराड जी का असामयिक निधन

देश के जाने-माने विद्वान, शिक्षाविद एवं (एम.आई.टी.) वर्ल्ड पीस यूनिवर्सिटी, पुणे, महाराष्ट्र के संस्थापक डॉ. विश्वनाथ कराड जी की धर्मपत्नी श्रीमती उर्मिला कराड जी का विगत दिनों असामयिक निधन हो गया है। आदरणीया बहन उर्मिला कराड जी भी एक शिक्षित एवं सुसंस्कारित गृहणी थीं। वह एक लेखिका एवं कवित्री भी थीं। पूज्य स्वामी अग्निवेश जी के साथ मुझे भी आदरणीय कराड जी के संस्थान में जाने का अवसर प्राप्त हुआ है। श्रीयुत कराड जी देश के प्रख्यात समाजसेवी हैं। ऐसी सुसंस्कारित एवं शिक्षित गृहणी का असामयिक निधन उनके परिवार एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। परन्तु परमात्मा के नियम के सामने हम सब लोगों के लिए नतमस्तक होने के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं होता। स्वामी आर्यवेश जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से बहन उर्मिला कराड जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की तथा दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी, नई दिल्ली के कर्मठ प्रधान श्री ललित चौधरी जी का असमय निधन

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी, नई दिल्ली के कर्मठ प्रधान श्री ललित चौधरी जी का विगत दिनों असमय निधन हो गया है। श्री ललित जी आर्य समाज संगठन से जुड़कर परोपकार एवं समाजसेवा के कार्य काफी लम्बे समय से कर रहे थे और आर्य समाज विकासपुरी, दिल्ली के प्रधान के रूप में उन्होंने लम्बे समय तक आर्य समाज की प्रचार-प्रसार के कार्य को गति देने का कार्य किया। ऐसे कर्मठ एवं जुझारू आर्य कार्यकर्ता का निधन आर्य समाज संगठन एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। परन्तु परमात्मा के नियम के सामने हम सब लोगों के लिए नतमस्तक होने के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं होता। स्वामी आर्यवेश जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री ललित चौधरी जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

पृष्ठ 6 का शेष

ईस्ट अफ्रीका आर्य समाज का संक्षिप्त इतिहास

का निर्णय लिया गया। जो कि 1930 में बनकर तैयार हुआ। इसमें सभी को निःशुल्क शिक्षा दी जाने लगी विशेषकर अंग्रेज के विरुद्ध संघर्ष में शहीद होने वालों के बच्चों को। इसी विद्यालय को अब अपग्रेड किया गया है। जिसका उद्घाटन आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी विश्वविख्यात आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने अभी अपने नैरोबी दौरे के दौरान 2 जुलाई, 2022 को किया।

आर्य समाज ने स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा चलाए गए शुद्धि आंदोलन को भी कीनिया के देशों में प्रारंभ किया और यहां पर तर्क और विज्ञान के आधार पर लोगों को समझाया जाने लगा। आर्य समाज ने नामकरण संस्कार, विवाह संस्कार तथा अंतिम संस्कार के महत्व को जन–जन तक पहुंचाने का सार्थक प्रयास किया और उसका परिणाम यह हुआ कि कितनी ही मुस्लिम तथा ईसाई बहनों ने वैदिक धर्म को अपनाया और वैदिक रीति–रिवाज से अपना विवाह संस्कार संपन्न करवाया।

आर्य समाज के अधिकारी कीनिया स्थित हॉस्पिटल के संपर्क में रहते थे और वहां पर यदि किसी की मृत्यु हो जाती थी तो उसका अंतिम संस्कार वैदिक रीति से किया जाता था। हजारों लोगों के अंतिम संस्कार आर्य समाज के लोगों ने वैदिक रीति से वहां पर करवाए। आर्य समाज के नामकरण, विवाह संस्कार तथा अंतिम संस्कार करवाने के अभियान को इतनी प्रसिद्धि मिली कि एक समय ऐसा आया जब कीनिया में आर्य समाज के युवाओ को वहां की सरकारों ने भी मान्यता प्रदान की।

वर्ष 1924–25 में भारत में महर्षि दयानंद जन्म शताब्दी के आयोजन जगह–जगह पर किए गए जिसमें केनिया के अधिकारी भारत पहुंचे वहीं उन्होंने 1925 में महर्षि दयानंद जन्म शताब्दी कीनिया में भी मनाई। जिसमें भारतीय समुदाय के हजारों लोगों ने भाग लिया।

1928 में सिल्वर जुबली, 1953 में गोल्डन जुबली, 1978 में हीरक जयंती तथा 2003 में आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह का आयोजन किया गया। हम तो यही कह सकते हैं कि लगभग 126 वर्ष पूर्व पंजाब से गए कुल 39 लोगों के प्रयास व पुरुषार्थ से आज ईस्ट अफ्रीका के देशों में आर्य समाज तथा ऋषि दयानंद के विचारों की पताका निरंतर फहरा रही है।

समय–समय पर आर्य समाज के संन्यासी तथा विद्वान कीनिया की धरती पर वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए आते रहे हैं जिनमें स्वामी स्वतंत्रतानंद, स्वामी नारायणानंद सरस्वती, स्वामी ध्रुवानंद, स्वामी इंद्रवेश, स्वामी अग्निवेश, स्वामी सत्यप्रकाश, स्वामी आर्यवेश, स्वामी आदित्यवेश आदि मुख्य हैं।

आर्य समाज द्वारा आर्य प्राईमरी स्कूल, संतोकबेन आर्य कन्या पाठशाला, आर्य गर्ल्स सेकेंडरी स्कूल, पार्कलैंड आर्य गर्ल्स हाई स्कूल, श्रद्धानंद आर्य नर्सरी, आर्य वैदिक एकेडमी, आर्य समाज एकेडमी आदि कई शिक्षण संस्थाओं का संचालन हो रहा है।

यहाँ पर 1928 में आर्य वीर दल, 1930 में महिला विद्यालय, 1942 में आर्य क्रीड़ा संघ, 1946 में आर्य वीरांगना दल, 1964 में दयानंद होम (अनाथालय व वृद्धाश्रम) 1983 में आर्य बाल सभा की स्थापना की गई।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य प्रतिनिधि सभा ईस्ट अफ्रीका के तत्वावधान में आर्य समाज मोम्बासा का भव्य समारोह सम्पन्न

स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी एवं स्वामी वेदानन्द जी के हुए ओजस्वी व्याख्यान

आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री यशपाल मोंगा जी कार्यक्रम में रहे विशिष्ट अतिथि

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी, विश्वविख्यात आर्य संन्यासी एवं सार्वदेशिक सभा के नेता तथा स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक के संस्थापक स्वामी आर्यवेश जी तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी ने केनिया, युगांडा तथा ईस्ट अफ्रीका में 15 दिनों तक लगातार वेद प्रचार का कार्य किया। स्वामी आर्यवेश जी महाराज प्रत्येक वर्ष वेद प्रचार के कार्यों हेतु देश से बाहर विदेशों में अक्सर जाकर वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार को तीव्र गति प्रदान करते रहते हैं। वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के कार्यों में दिन–रात अनवरत स्वामी जी लगे रहते हैं। इसी कड़ी में स्वामी जी ने इस वर्ष भी 15 दिन की विशेष वेद प्रचार यात्रा में अनेकों कार्यक्रमों में सम्मिलित होकर आर्यजनों के मनोबल को बढ़ाने का कार्य किया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा ईस्ट अफ्रीका द्वारा आयोजित अन्य कार्यक्रमों की कड़ी में ही केनिया के समुद्र से घिरे हुए शहर मोंबासा स्थित आर्य समाज में तीन दिवसीय भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मोंबासा में 8 जुलाई, 2022 को स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण के माध्यम से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। आर्य समाज के इस कार्यक्रम में उपस्थित माताओं एवं बहनों ने ध्वज गीत के बाद भजन प्रस्तुत किये तथा आर्य समाज द्वारा संचालित स्कूल के बच्चों ने भी सुन्दर भजन प्रस्तुत किए। बहुत छोटे–छोटे बच्चों द्वारा विभिन्न देशों की संस्कृतियों की झलक दिखाई गई। जो अत्यन्त आकर्षक एवं सराहनीय रही। आर्य समाज के धर्माचार्य श्री यशपाल अंगिरा ने मंच का संचालन किया। स्वामी आर्यवेश जी ने इन सभी को आर्य समाज की गतिविधियां बढ़ाने के लिए साधुवाद दिया। कार्यक्रम में विशेष रूप से पधारे स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी वेदानन्द जी, स्वामी आदित्यवेश जी तथा श्री यशपाल मोंगा जी का श्री गौरव गुप्ता, सुश्री रुचि अग्रवाल, श्री प्रवीण अग्रवाल, सुश्री लता मेंगन आदि ने ओम पट्ट पहनाकर स्वागत किया। तीनों दिन का यज्ञ तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य एवं श्री यशपाल अंगिरा जी के ब्रह्मत्व में आयोजित हुआ। स्वामी आदित्यवेश जी, श्री कमल काशीराम तथा श्री दिवेश काशीराम के द्वारा एक वर्कशॉप का संचालन भी हुआ जिसमें आर्य समाज के प्रचार–प्रसार का कार्य सोशल मीडिया के माध्यम से तीव्र गति से प्रसारित करने पर चर्चा हुई। आर्य समाज दक्षिण अफ्रीका द्वारा संचालित हील फाउंडेशन तथा स्वामी आर्यवेश जी के सानिध्य में संचालित 'मिशन आर्यवर्त' के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा हुई। रात्रिकालीन सत्र में मोम्बासा में भारत के राजदूत श्री संदीप शर्मा सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में आर्य समाज के प्राथमिक सिद्धांतों की चर्चा करते हुए कहा कि आर्य समाज के प्रत्येक कार्यकर्ता को कम से कम इन सिद्धांतों की जानकारी अवश्य होनी चाहिए। स्वामी जी ने आर्य समाज के छठे नियम की विस्तार पूर्वक व्याख्या करते हुए बताया कि आर्य समाज का विचार संकीर्ण नहीं व्यापक है और हम सबको उसी के अनुरूप कार्य करने की आवश्यकता है।

स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि आर्य प्रतिनिधि सभा ईस्ट अफ्रीका प्रारंभ से ही भारत में सहयोग करती रही है। विदित हो कि कोरोनाकाल में स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ में स्वामी दयानंद ऑक्सीजन बैंक खोला गया जिसमें केनिया से दो दर्जन ऑक्सीजन कंसंट्रेशन तथा 50 ऑक्सीमीटर भेजे गये तथा आर्य समाज दक्षिण अफ्रीका से भी इसी तरह सहयोग प्राप्त रहा। इससे पूर्व 1924 में गुरुकुल कांगड़ी के लिए ढाई लाख रुपए, तीस हजार रुपए की गाड़ी एवं एक कमरा बनवाया गया। गुरुकुल के संचालन के लिए बहुत लंबे समय तक तीन हजार रूपये दान भेजा जाता रहा। 1938 में जब आर्य समाज में निजाम हैदराबाद के खिलाफ आंदोलन प्रारंभ किया गया तो उस समय भी यहां पर आकर बसे भारतीय मूल के आर्य महानुभाव भारत का सहयोग करते रहे। 1999 में कारगिल युद्ध में शहीद हुए सैनिकों की विधवाओं के लिए भी विशेष आर्थिक सहयोग यहाँ के लोगों ने किया। गुजरात में आई भूकंप की त्रासदी के समय भी आर्य प्रतिनिधि सभा ने उस समय लगभग साढ़े चार लाख रुपए सहायतार्थ भेजे। ऐसे ही विभिन्न अवसरों पर सहयोग प्राप्त होता रहा है।

स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज केनिया के अधिकारियों से मिलकर केनिया के युवाओं को प्राचीन वैदिक संस्कृति से परिचित करवाने के लिए विशेष कार्यक्रम तैयार करेंगे। स्वामी जी ने कहा कि शिक्षा, संस्कार तथा संस्कृति से युवाओं को अवगत कराना आगामी दिनों का मुख्य कार्य रहेगा।

आर्य समाज की ओर से सभी अतिथियों का स्वागत किया गया तथा विशेष सहयोग करने वाले स्थानीय कार्यकर्ताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

केनिया तथा युगांडा में आयोजित कार्यक्रमों के आयोजन में इनका रहा विशेष सहयोग

लगभग 15 दिन तक विभिन्न स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों में श्री स्वर्ण वर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा ईस्ट अफ्रीका, डॉ यशपाल बंसल, महामंत्री सभा व प्रधान आर्य समाज नैरोबी, श्रीमती वृंदा शर्मा, प्रधान स्त्री आर्य समाज नैरोबी, श्री अनिल कपिला, कोषाध्यक्ष सभा, श्री यशपाल मोंगा, सह मंत्री सभा, श्री ओबराय, श्री अरुण तनेजा, श्री यशपाल अंगिरा, श्री गौरव गुप्ता, रुचि अग्रवाल, श्री प्रवीण कुमार, श्री अमित कुमार, श्री वरुण देव आचार्य, आचार्य मवांगी आर्य, डॉ दीवेश काशीराम, श्री कमल काशीराम आदि का सहयोग रहा।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।